

# ॥ आतमसार ग्रंथ ॥

## मारवाडी

महत्वपूर्ण सुचना-रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांडक इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है। कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

राम ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥ ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥ राम

राम ॥ अथ आतमसार ग्रंथ लिखंते ॥ राम  
राम अमर देस अस्थान हमारा ॥ ज्या सूं हम चल आया ॥ राम  
राम हंसा काज रमूं जुग माही ॥ अवगत मोही पठाया ॥१॥ राम  
राम साच झूट का करूं नवेडा ॥ बेदो भेळ न राखूं ॥ राम  
राम सब ही करूं न्याव सूं दूरा ॥ असत मुख नही भाखूं ॥२॥ राम  
राम पिंडत सुणो सकळ जुग सुरता ॥ भेद अभेद बखाणूं ॥ राम  
राम पुरण ब्रम्ह परातम पेला ॥ ता मिल रामत ठाणूं ॥३॥ राम  
राम साची कहूं झूट नही बोलूं ॥ सब काना सुण लीजो ॥ राम  
राम रमता राम सकळ घट ब्यापक ॥ प्रम पद चित्त दीजे ॥४॥ राम  
राम रंरकार निरधार अगम मे ॥ ता मिल भेद पिछाणूं ॥ राम  
राम जोती जगे अगम घर माही ॥ यासूं परे पियाणूं ॥५॥ राम  
राम ढीला काय भ्रम मत भुलो ॥ माया चेन दिखावे ॥ राम  
राम यां के परे प्रम परसोत्म ॥ ज्यां हाँ लग सुरत न जावे ॥६॥ राम  
राम दीसे चेन नेण सूं निरखे ॥ काँना बाज सुणीजे ॥ राम  
राम तब लग उरे परे नही पूंता ॥ नाद सुणे मन भीजे ॥७॥ राम  
राम अनहद घुरे सुणे जन माँही ॥ ऊंची मूठ लखावे ॥ राम  
राम तब लग देस माँहि जन पेंडा ॥ देव लोक मझ आवे ॥८॥ राम  
राम चवदे भवन लोक सब चूरे ॥ त्रुगुटी तंबू दिवाणा ॥ राम  
राम अनहद घुरे मूठ कछु नाची ॥ हरजन ध्यान लोभाणा ॥९॥ राम  
राम यां के परे परम गुर न्यारा ॥ ता गत लखे न कोई ॥ राम  
राम हद मे देव मानवी मोसर ॥ अर साध त्रुगुटी होई ॥१०॥ राम  
राम यां कूं लोप चले जन कोई ॥ सत्त गुर रूप कहीजे ॥ राम  
राम माया रहे हद के माँहि ॥ बेहद वाँसे लहीजे ॥११॥ राम  
राम नव अस्थान देश हे भाई ॥ त्रुगुटी परे बताया ॥ राम  
राम वाँकू लोप चले जन पेला ॥ निज पद मांय समाया ॥१२॥ राम  
राम असी बात तत्त म्हे भाखूं ॥ निज पद नेट निसाणा ॥ राम  
राम सुणज्यो आण सकळ जुग हंसा ॥ अक हरजन ध्यान लोभाणा ॥१३॥ राम  
राम रटीयो नांव निरंतर न्यारो ॥ रूम रूम रस पीया ॥ राम  
राम हरिया हुवा मेघ घण बूठा ॥ मुवा मीडका जीया ॥१४॥ राम  
राम नवसे नदी निनाणू चाली ॥ खळक्या नीर पहाडां ॥ राम  
राम मिलिया माळ पीया बन सारा ॥ लग्या फुल फळ झाडां ॥१५॥ राम

राम	॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥	॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥	राम
राम	भार अठारे चेत बिन फूलें ॥ म्हक रहया गरणाई ॥		राम
राम	हरजन हरष भयो मन भारी ॥ निरख निसो दिन जाई ॥१६॥		राम
राम	ऐसा अेक अचंभा भारी ॥ अजब ख्याल दिखलाया ॥		राम
राम	सातुं समंद डेडरे सोख्या ॥ सिंह बाकरी खाया ॥१७॥		राम
राम	तरवर तळे गोढ आकासां ॥ डाळा चल्या पियाळां ॥		राम
राम	ऐसा अजब ख्याल हम देख्या ॥ फाडी भैस शियाळां ॥१८॥		राम
राम	त्रवर जाय अधर फर सींच्या ॥ डाळ पेड गरणाया ॥		राम
राम	फळ सो लग्या जडा मध बिचे ॥ सूवा ऊड वांहा आया ॥१९॥		राम
राम	निरख्या जाय नेण हम देख्या ॥ फळ का काम करारा ॥		राम
राम	अनंत कोट संताने खाया ॥ सो फळ सही हमारा ॥२०॥		राम
राम	सूवे जाय अगम फळ चाख्या ॥ पाय बोहोत सुख आया ॥		राम
राम	ऐसा अेक अचंभा भारी ॥ मडे काळ कूं खाया ॥ २१॥		राम
राम	सूवो जाय हुवो अब चेतन ॥ बोले बेण रसीला ॥		राम
राम	निरभे भयो आद घर मांही ॥ करम काट सब जाळा ॥ २२॥		राम
राम	बोलत सुवो बेण रस प्यारा ॥ सुणत सकळ मन भावे ॥		राम
राम	निरभे नाव निरंजण नीका ॥ ता मिल भेव बतावे ॥ २३॥		राम
राम	देख्या नगर स्हेर ब्हो भारी ॥ ता मध हाट मंडाणा ॥		राम
राम	नाँ नाँ भाँत बस्तु बोहो बिणजे ॥ नित्त साहा करे छडाणा ॥ २४॥		राम
राम	लंबो ब्होत चहुं दिस निरख्यो ॥ तीनू लोक समाया ॥		राम
राम	सर्ब धात का कोट काँगरा ॥ तामे हम फिर आया ॥ २५॥		राम
राम	गळीया ब्होत बोहोत्तर किल्ला ॥ अेक अचंभा भारी ॥		राम
राम	अेकण दुःखि व्हे सो दुखिया ॥ सकळ स्हेर नर नारी ॥ २६॥		राम
राम	बीचे एक बाजार मंडाणा ॥ सिरें हाट उण मांही ॥		राम
राम	भूंडी भली सकळ सो चीजां ॥ उण घर नास्त नांही ॥ २७॥		राम
राम	अेको भन्या भन्या सब कोठा ॥ अेसी कळा बणाई ॥		राम
राम	पीवे स्हेर नख चख सारो ॥ दुबध्या रहे न माई ॥ २८॥		राम
राम	च्यारुं बरण अेक घर देख्या ॥ राव रंक सब लोका ॥		राम
राम	अेकुं कार अेक घर जीमे ॥ देव दुर्ग सब झोका ॥ २९॥		राम
राम	दुबध्या नही उँच नहीं नीचा ॥ स्हेर बसे चहुँ फेरा ॥		राम
राम	ता मध राज करे मन हाकम ॥ पाँच जोध संग चेरा ॥ ३०॥		राम
राम	निरख्यो नगर दिष्ट सब आयो ॥ गळी गळी हम फिरीया ॥		राम

राम ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥ ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥ राम

राम चवदे सेंहस पिचतरं छासट ॥ अे लंघ पार उतररीया ॥ ३१॥  
राम चवदे सेंग किया हम पेली ॥ पाँच बीस जुग बाँध्यो ॥  
राम तीन मांय अेक सूं यारी ॥ प्रेम बाण मन सांध्यो ॥ ३२॥  
राम आठू दिसां फिच्या हम सारे ॥ च्यारूँ चख मिलाया ॥  
राम पूरब पिछम उत्तर दिखण ॥ गुड नाभ घर पाया ॥ ३३॥  
राम बरसे धरण गिगन घर भीजे ॥ नदियां चली अपूटी ॥  
राम चडीया नीर किल्ला सब भरीया ॥ नाब आब सब तूटी ॥ ३४॥  
राम चवदे सात तीन मिल उलटया ॥ चडीया नीर अकाशाँ ॥  
राम हरजन जाय करे वाँ खेती ॥ निज कण बीज बवाशाँ ॥ ३५॥  
राम चाले अरट पानडी बाजे ॥ निरखूँ दिष्ट पसारी ॥  
राम निस दिन बहे थके नही कोई ॥ पीवे सब बन क्यारी ॥ ३६॥  
राम देख्या अेक तमासा अेसा ॥ गिगन मंडळ में हुवा ॥  
राम हाळी बळद बिनां सुण नारी ॥ सींचे नित पत कूवा ॥३७॥  
राम झेले चडस अधर फरे ऊँची ॥ बारो दुळण न पावे ॥  
राम छसे सेंस ईकीसुं बारा ॥ निस दिन भला समावे ॥ ३८॥  
राम कूवो गिगन धरण में मूंडो ॥ पीछ अकाशाँ पीवे ॥  
राम पांच पचीस भरे पिणियारी ॥ कूप सींच सब जीवे ॥ ३९॥  
राम गंगा बहे सरस्ती बीचे ॥ जमना आण मिले हे ॥  
राम तपस्या करे जोगेश्वर पुरा ॥ भंवर गुफा घर रहे ॥ ४०॥  
राम धरणी शीस गिगन का नाँका ॥ तहाँ मेहल अेक भारी ॥  
राम सातूँ पोळ दोय द्रवाजा ॥ रमे पुरष संग नारी ॥ ४१॥  
राम सातुं पोळ पोळिया बेठा ॥ बंध किया सब लोई ॥  
राम नट खट चोर तसकर दुजा ॥ आण न पावे कोई ॥ ४२॥  
राम अेसा जतन करे घर त्रिया ॥ पीव रमण संग चाली  
राम बारी खोल धसी तब आगी ॥ जक्त लाज सब पाली ॥४३॥  
राम तपसी करे तपस्या आगे ॥ ब्होत तेज अंत भारी ॥  
राम चरणा लगी करी प्रकंमाँ ॥ बूजे पीव बिचारी ॥४४॥  
राम नदियां बहे नीर जळ धारा ॥ जोगी करे संपाडा ॥  
राम धूप ध्यान धूणि पर बेठा ॥ बूजे ऊजळ दिहाडा ॥४५॥  
राम धूणि सात तीन से जोगी ॥ तपस्या तत्त बिचारे ॥  
राम जेता आहार भोग बिन जीवे ॥ काळ घेर वां मारे ॥४६॥ राम

राम	॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥	॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥	राम
राम	ईमृत पिवे अमी फल खावे ॥ नेःचळ डिगे न कोई ॥		राम
राम	आवागवण जनम अर मरणा ॥ करम रह्या सब रोई ॥४७॥		राम
राम	नवसे धेन नुजणो पडियो ॥ दूवण अेक बिचारी ॥		राम
राम	मारे सेढ धरण के माही ॥ भरे गिगन घर पारी ॥४८॥		राम
राम	जमीया दही बिलोवण बेठा ॥ घित छाछ व्हा न्यारा ॥		राम
राम	हरजन जाय करे प्रसादी ॥ प्रीतम पुरसण हारा ॥४९॥		राम
राम	तिरपत जीम हुवा मन पूरण ॥ देखे सकळ तमासा ॥		राम
राम	धिंन धिंन संत भाग जन तेरा ॥ गिगन मंडळ घर बासा ॥५०॥		राम
राम	देवळ मांहिं देवरां दरस्या ॥ आत्म में प्रमात्मा ॥		राम
राम	निस दिन निरख हुवा मन राजी ॥ छाडी लाज कुळ जाता ॥५१॥		राम
राम	हंसा जाय मिल्या निज हंसे ॥ निजमन मन काहाण्यां ॥		राम
राम	सुरती पलट भई पतब्रता ॥ पाँच पकड़ घर आप्या ॥५२॥		राम
राम	पलट्या ज्ञान भया विज्ञानी ॥ ब्रम्ह ज्ञान दरसाया ॥		राम
राम	सूरज जाय मिल्या घर चंदे ॥ पवन गिगन समाया ॥५३॥		राम
राम	छेकी धरण कँवळ खट बिंध्या ॥ शिरे स्याम ज्यां हाँ आया ॥		राम
राम	मिलीया प्राण प्रम गत मांहि ॥ दसमें जाय समाया ॥५४॥		राम
राम	नव लख प्रस क्रोड तेतीसूं ॥ परे प्रम पद पाया ॥		राम
राम	मिलीया प्राण ग्रक हुवा मांहि ॥ अणभे ज्ञान सुणाया ॥५५॥		राम
राम	त्रुगटी मोह झिला मिल जोती ॥ ब्रसे मुख पर नुरा ॥		राम
राम	सुखमण घटा अमीरस चूवे ॥ पीवे हरजन पूरा ॥५६॥		राम
राम	पीवत छाक चडे अंत भारी ॥ बेण शब्द मुख बोले ॥		राम
राम	धरहर इंदं धडूके ऊंडो ॥ भ्रम ताक सब खोले ॥५७॥		राम
राम	सुखमण झरे पिवे जन पूरा ॥ अमर हुवा जुग माही ॥		राम
राम	निर्भे नांव निरंतर पाया ॥ चल्या जुग छिट काई ॥५८॥		राम
राम	त्रुगटी चूर चल्या जन आगा ॥ असंख सूर प्रकासा ॥		राम
राम	सुन्न ही सुन्न सुन्न मे साहिब ॥ जहाँ हरीजन का बासा ॥५९॥		राम
राम	कीया बास आस तज सारी ॥ ब्रम्ह अमर घर पाया ॥		राम
राम	काळ क्रम अेक नही लागे ॥ जहाँ जन जाय समाया ॥६०॥		राम
राम	बारी अेक अजब हम खोली ॥ अेसी कळा ऊघाड्या		राम
राम	प्राण पुरष आगा तब धसिया ॥ बोहोत तेज सूं बाड्या ॥६१॥		राम
राम	आडी भींत चित्त बोहो भारी ॥ ता को ब्रम्ह दिखावे ॥		राम

राम	॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥	॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥	राम
राम	सोनो सरस सोळवो दरसे ॥ ताहि देख सुख पावे ॥६२॥		राम
राम	वाँ के उरी सकळ रे चेतन ॥ पांच पचीस पिचंतर ॥		राम
राम	क्रोडाँ तीन अरध फिर मांहि ॥ सोळे सात सितंतर ॥६३॥		राम
राम	नवसे नेम निनाणू चेतन ॥ सब बेराट पिछाणो ॥		राम
राम	पनरे क्रोड भेळ पैतीसूं ॥ ठाम ठाम सब जाणो ॥६४॥		राम
राम	दोय सो डोढ सईकडा घाटा ॥ लोप चले जन सोई		राम
राम	सातूं दीप नवे नव खंडा ॥ चेत घरोघर होई ॥६५॥		राम
राम	लाँधी भींत धस्या जन आघा ॥ ठाम ठाम बंध हुवा ॥		राम
राम	असा अक अचंभा भारी ॥ फिरे सकळ जुग मूवा ॥६६॥		राम
राम	पाँचू पलट भया निज ज्ञानी ॥ च्यारां भली समाई ॥		राम
राम	बिष की शीर सकळ ले पेली ॥ ईम्रत शीर चलाई ॥६७॥		राम
राम	चवदे नार अकली बाँध्या ॥ तिरिया जोर करारी ॥		राम
राम	सबके गळे जड्या अक सांकळ ॥ निरभे भई बिचारी ॥६८॥		राम
राम	भव सो रह्यो त्रुगटी हेटे ॥ काम क्रोध अंकारा ॥		राम
राम	शिलता समंद घाट सब ओघट ॥ लाँघ हुवा जन पारा ॥६९॥		राम
राम	आसा थकी कल्पना ऊठी ॥ भ्रम क्रम हद मांहि ॥		राम
राम	बेहद जाय मिल्या जन पेला ॥ ऊँच निच कोई नाहिं ॥७०॥		राम
राम	बेहद मांय ब्रम्ह सो भ्यासे ॥ दुतिया रहे न कोई ॥		राम
राम	नारी पुर्ष थक्या अध बीचे ॥ भँवर गुफा घर सोई ॥७१॥		राम
राम	रागाँ मांहि रीझ रह्यो भँवरो ॥ आगी सुरत न मेले ॥		राम
राम	हद बेहद की जेळ मंडाणी ॥ ना पर निस दिन खेले ॥७२॥		राम
राम	असा अक अचंभा भारी ॥ निरख प्रख में भाखूँ		राम
राम	सुणज्यो सकळ साध जन भेदी ॥ गोप बात अक दाखूं ॥७३॥		राम
राम	पूरब दिसा धन्या था गोळा ॥ धरणी आण समाया ॥		राम
राम	सुरत निरत का लग्या पलीना ॥ गोळे जोर सवाया ॥७४॥		राम
राम	चलिया गोळ पिछम के नाके ॥ तीनू कोट डहाया ॥		राम
राम	बावन किल्ला सात नव खाई ॥ फोड निसाणे आया ॥७५॥		राम
राम	आगे गेल दोय ज्यां फूटी ॥ सोच रहा मन मांहि ॥		राम
राम	अब कहो कोण बतावे गेला ॥ अमर लोक सत्त सांई ॥७६॥		राम
राम	सत्त गुरु सरण ज्ञान सब सोझ्या ॥ राम नाम लिव लाया ॥		राम
राम	दोनू गेल रही पसवाडे ॥ बीचे राहा दिखाया ॥७७॥		राम

राम	॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥	॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥	राम
राम	आगे जाय मिल्या घर अकी ॥ उलटा सूत खंचाणा ॥		राम
राम	पांच पचीस निनाणूँ नवसे ॥ घेर गिगन घर आणा ॥७८॥		राम
राम	अधर हुवा आद घर मांहि ॥ न्यारा फटे न कोई ॥		राम
राम	सब ही बस्या अक घर मांही ॥ राव रंक सब लोई ॥७९॥		राम
राम	बस्ता नगर किया सब ऊझड ॥ रस्ता बंद कराई ॥		राम
राम	सब कुं घेर किल्ला पर चड्या ॥ बस्या गिगन घर आई ॥८०॥		राम
राम	बसीयो स्हेर सिखर पर भारी ॥ चोर जार नही लागे ॥		राम
राम	सेजां थक्या भोमिया सारा ॥ धणी निसो दिन जागे ॥८१॥		राम
राम	चडिया गस्त सब्द गहे हाथे ॥ चोर जार सब मान्या ॥		राम
राम	निर्भे हुवा चड्या जन ऊँचा ॥ काम काज सब साच्या ॥८२॥		राम
राम	लागा ध्यान खबर तब पाई ॥ सुरत निरत रा मेळा ॥		राम
राम	मन सो पवन सब्द मिल तीनुं ॥ हुवा आद घर भेळा ॥८३॥		राम
राम	तीनु ध्यान त्रुगटी लागे ॥ न्यारी कळा दिखावे ॥		राम
राम	अेसी रीत बिध हम देखी ॥ अेक नार जान कर आवे ॥८४॥		राम
राम	फेरा ले जाय कर प्रणे ॥ निस दिन करे खवासी ॥		राम
राम	अेसा अजब ख्याल हम देख्या ॥ अेक मच्छी मरे पियासी ॥८५॥		राम
राम	मच्छी दोड ताड पर चडगी ॥ कउवे धनष उडाया ॥		राम
राम	तर का नीर पीया चड ऊँची ॥ झींवर जाळ बंधाया ॥८६॥		राम
राम	सर्वर मांही स्हेर सोई बसीयो ॥ स्हेर सिखर के मांहि ॥		राम
राम	जांमे भँवर पांच रस भोगी ॥ निरख निसो दिन जाई ॥८७॥		राम
राम	पाँचूँ कंवळ कंवळ पर भँवरा ॥ भणक रह्या दिन राती ॥		राम
राम	अेका कंवळ भँवर बिन सारा ॥ सबे मुड के साथी ॥८८॥		राम
राम	ऊभा खडा तमासा देखे ॥ स्हेर लूट सब जावे ॥		राम
राम	च्यारुं जोंध नार बिन काचा ॥ सस्तर नही संभावे ॥८९॥		राम
राम	नारी आण धाकल्या सब कुं ॥ फिट तमारा जीया ॥		राम
राम	सूत क सुत भेद सब बूज्या ॥ नार सकळ कुं दीया ॥९०॥		राम
राम	तीनुं जाग नगर कुं घेरो ॥ लागे बंध करारा ॥		राम
राम	राजा चढ्यो नगर को गढ पर ॥ घुन्या निसाणू सारा ॥९१॥		राम
राम	खट सो जाग टेरीया बेंता ॥ तीन जाग ग्रह भारी ॥		राम
राम	अेसा बंध लग्या उन बीचे ॥ सुखी सकळ नर नारी ॥९२॥		राम
राम	पेलो बंध लग्यो जालंद्री ॥ नांव नाभ घर आया ॥		राम

राम	॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥	॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥	राम
राम	जाड़ी मिले आण सुटी सूं ॥ साहिब मांहि लखाया ॥१३॥		राम
राम	दूजा बंध पिछम के गेले ॥ शीस पीट पर फेरे ॥		राम
राम	असा करे तकड़ बंध गाढा ॥ स्हेर सकळ ले घेरे ॥१४॥		राम
राम	ताका नाव उत्तान पात हे ॥ लागे जोर करारा ॥		राम
राम	तीजा बंध त्रुगटी दीया ॥ ताटक बंध बिचारा ॥१५॥		राम
राम	उलटा नेण तक्त पर बेठा ॥ असा ख्याल दिखाया ॥		राम
राम	दोनू तरफ लग्या बोहा खंचा ॥ बीचे तेज तपाया ॥१६॥		राम
राम	भीजे रूम परसीनो छूटे ॥ लाल चख व्हे गोसा ॥		राम
राम	असा नेण तेज में भारी ॥ अमल कियां हुवे रोसा ॥१७॥		राम
राम	तां सूं तेज मगन खुमारी ॥ असा अवरन कांही ॥		राम
राम	जाणोगा कोई हरजन पूरा ॥ मिल्या आद घर मांहि ॥१८॥		राम
राम	तीनू बंध चोकीया च्यारी ॥ कंवल छेद षट आया ॥		राम
राम	यां लग बांत सेल हम लावी ॥ आगे दुलभ दिखाया ॥१९॥		राम
राम	यांही आय मगन मन हुवा ॥ प्रम पद सो पाया ॥		राम
राम	सत्तगुर म्हेर करी शिष ऊपर ॥ आगे राहा दिखाया ॥१००॥		राम
राम	तेसी तलब लगी सी आदू ॥ पेम पीड पत माही ॥		राम
राम	असा हुवा आण यां दुखिया ॥ उलटी बिरह जगाई ॥१०१॥		राम
राम	रटियो नांव नेम धर भारी ॥ अंतर पीड पुकारे ॥		राम
राम	अेसी करक कळेजे खटके ॥ कोई भाल संध पर मारे ॥१०२॥		राम
राम	अेसी पीड प्रेम सूं लागी ॥ सत्तगुर शब्द सुणाया ॥		राम
राम	अगम देश दरस्या बिन मन के ॥ तजूं प्राण मन काया ॥१०३॥		राम
राम	निस दिन मंड्यो मोरचे सूरु ॥ सोहंग शब्द उचारे ॥		राम
राम	मं मो थक्यो मेर के माही ॥ सेंग त्रुगटी लारे ॥१०४॥		राम
राम	आधो शब्द चल्यो ता आगे ॥ रटियां बिना लखाया ॥		राम
राम	रसणा थकी लिंगन सो चाली ॥ मन ले सुरत मिलाया ॥१०५॥		राम
राम	नाद बिंद नारी दे नीचे ॥ आगे अगम अखाडा ॥		राम
राम	वां लग प्राण जाय जब पूगा ॥ पाँचू गोड उपाड्यां ॥१०६॥		राम
राम	जेता निमष पलक वां रेणो ॥ सुध बुध रहे न काई ॥		राम
राम	कही ये काहा केण नही आवे ॥ ब्रम्ह भेव का भाई ॥१०७॥		राम
राम	बरणू ब्रण रूप नही कोई ॥ सुख दुःख आव न जावा ॥		राम
राम	त्रुगटी परे इसी बिध द्रसे ॥ ज्ञान न गुष्ट न गावा ॥१०८॥		राम



राम ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥ ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥ राम

राम बाणी बेद बात सब ऊली ॥ कथे बके हृद मांहि ॥  
राम जब जन जाय देश वे देख्या ॥ बिना ध्यान कछु नाही ॥१०९॥  
राम आतम मांहि अनंत हे लीला ॥ सत्तगुर हमे दिखाई ॥  
राम जन सुखराम निरख हुवा निरभे ॥ प्राण प्रम गत पाई ॥११०॥  
राम आतम सार ग्रंथ हे असो ॥ जे कोई आण बिचारे ॥  
राम जन सुखराम मोख को गेलो ॥ काळ क्रम सब मारे ॥१११॥  
राम उपजे ज्ञान क्रम सब छूटे ॥ भ्रम बिधू से सारा ॥  
राम आतम मांहि प्रम पद पावे ॥ जे कोई करे बिचारा ॥११२॥  
राम बाचे सुंणे अरथ जो चीने ॥ चेत चित्त दे मांहि ॥  
राम जन सुखराम ब्रम्ह के गेले ॥ भूल पडे कौ नाहि ॥११३॥  
राम सारी बात देख हम भाखी ॥ जे ती मोहि लखाई ॥  
राम जन सुखराम वार नही पारा ॥ ब्रम्ह भेद को भाई ॥११४॥  
राम आतम सार ग्रंथ ओ बाचे ॥ अरथ करे जो न्यारा ॥  
राम जन सुखराम गुरु सो मेरा ॥ म्हे हूँ शिष तुमारा ॥११५॥  
राम पांख पांख कळीयां सब सारी ॥ अरथ बिना नही अको ॥  
राम जन सुखराम ग्रंथ ओ कीयो ॥ साध सिध्द सब देखो ॥११६॥  
राम चीने भेद अरथ जो भाषे ॥ सो हे गुरु हमारा ॥  
राम जन सुखराम बिप्र घर जामा ॥ जिण ये ग्रंथ उचारा ॥११७॥

### ॥ दोहा ॥

राम आतम मे प्रमात मा ॥ दया करी भरपूर ॥  
राम जन सुखिया निरभे भया ॥ काळ कंट सब दूर ॥११८॥  
राम अंती आतम सार की ॥ सांखा सब पर वाण ॥  
राम जन सुखिया जन बाच कर ॥ लीज्यो तत्त पिछाण ॥११९॥  
राम तत्त सब्द हर नांव हे ॥ रटियां सब गम होय ॥  
राम जन सुखिया नव खंडरे ॥ तन मे दिसे जोय ॥१२०॥  
राम आतम मे प्रमातमा ॥ दरस्या दिन दयाल ॥  
राम जन सुखिया जब फूटगी ॥ भ्रम क्रम की पाळ ॥१२१॥  
राम पडदो फटक उडावियो ॥ अरस परस दीदार ॥  
राम सत्तगुर बिरम दासजी ॥ साचा सिरझण हार ॥१२२॥  
राम सांई सरणे साध के ॥ साहिब हे जन माय ॥  
राम जब देख्यो सुखराम जी ॥ गिगन मंडळ घर जाय ॥१२३॥

राम	॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥	॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥	राम
राम	गिगन धडूक्या इंद्र ज्यूं ॥ बाजा बजे अनंत ॥		राम
राम	जन सुखिया नोपत घुरी ॥ चल्या सांम दिस संत ॥१२४॥		राम
राम	साहिब निरख्या सुरत सूं ॥ खुलिया नेण अनेक ॥		राम
राम	ज्यूं सुखिया चसमो खुले ॥ अरस परस यूं देख ॥१२५॥		राम
राम	सेवक सांमी अेक हुवा ॥ क्षिर नीर मिल माय ॥		राम
राम	अब सुखिया ना बीछडे ॥ उथल पुथल होय जाय ॥१२६॥		राम
राम	साहिब पाया सांच सूं ॥ सत्तगुर के परताप ॥		राम
राम	सुखिया अंतर आत्मा ॥ द्रस्या आपो आप ॥१२७॥		राम
राम	द्रसण कीया दीन का ॥ आणंद अंग अपार ॥		राम
राम	सुखिया सेजां पावीया ॥ छूटी इम्रत धार ॥१२८॥		राम
राम	प्रस्या पूरण पीव कूं ॥ हिल मिल हुवा ज अेक ॥		राम
राम	सुखिया सब सुख ऊपना ॥ स्मरथ साहिब देख ॥१२९॥		राम
राम	साहिब जी की आतमा ॥ आण संभाळी राम ॥		राम
राम	सुखिया साहिब स्मरथ हे ॥ ले धान्या निजधाम ॥१३०॥		राम
राम	सुख सागर सांई मिल्या ॥ पूरण प्रमानंद ॥		राम
राम	सुखिया प्रचे पीव के ॥ बोले बाणी छंद ॥१३१॥		राम
राम	निरभे नायक रामजी ॥ मिलिया बाळद लाद ॥		राम
राम	सुखिया गेले गिगन के ॥ सांई सत्तगुर साध ॥१३२॥		राम
राम	सांई मिलिया सिखर मे ॥ जहाँ सेवग अर आप ॥		राम
राम	सुखिया नित पत प्रीत सूं ॥ सेजां सिंवरण जाप ॥१३३॥		राम
राम	असे मिलिया राम सूं ॥ तट त्रिबेणी तीर ॥		राम
राम	जन सुखिया पवना मिल्या ॥ निस दिन निरखे बीर ॥१३४॥		राम
राम	घट भीतर माळा फिरे ॥ निस दिन धारो धार ॥		राम
राम	अेक सूत सुखराम के ॥ अटके नही लगार ॥१३५॥		राम
राम	॥ इति श्री ग्रंथ आतमसार समपूरण ॥		राम
राम			राम
राम			राम
राम			राम
राम			राम
राम			राम
राम			राम
राम			राम
राम			राम